CIVIL DISOBEDIENCE MOVEMENT-1

FOR U.G.PART-3,PAPER-6

BY:ARUN KUMAR RAI

ASST.PROFESSOR

P.G.DEPT .OF HISTORY

MAHARAJA COLLEGE,ARA

Edit with WPS Office

आंदोलन की पृष्ठभूमि

- 1928 के नेहरू रिपोर्ट को सरकार द्वारा अस्वीकार कर दिया गया।
- 1929 की आर्थिक मंदी ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर बहुत बुरा प्रभाव डाला ।भारत का निर्यात कम हो गया ।निर्यात योग्य नगदी फसलों के दाम तेजी से गिरे जिससे धनी किसान प्रभावित हुए।मूल्यों में बेहद वृद्धि हुई भारतीय पूंजी पतियों के हित साम्राज्य वादियों के साथ टकरा रहे थे

Edit with WPS Office

आंदोलन की पृष्ठभूमि

फलत :जनता किसान और पूंजीपति सभी असंतुष्ट थे।

- मेरठ षड्यंत्र केस ,लाहौर षड्यंत्र केस ने सरकार विरोधी असंतोष को उग्र किया ।इससे हिंसा व भय का वातावरण व्याप्त हो गया। किसान ,मजदूर और क्रांतिकारियों के बीच समान दृष्टिकोण बनते जा रहे थे फलत:गांधी ने शांतिमय सविनय अवज्ञा के

Edit with WPS Office

आंदोलन की पृष्ठभूमि

माध्यम से संघर्ष का रास्ता दिखाया।

- 1929 के लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पारित किया गया इसमें कहा गया कि ब्रिटिश शासन को स्वीकार करना मनुष्य ईश्वर दोनों के प्रति पाप है।
- 26 जनवरी 1930 को पूर्ण स्वतंत्रता दिवस मनाने की घोषणा की गई और गांधीजी को सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ करने का अधिकार दिया गया ।

Edit with WPS Office

आंदोलन की पृष्ठभूमि

- गांधी ने आंदोलन से पूर्व वायसराय इरविन के समक्ष 2 मार्च 1930 को 11 सूत्रीय मांगें पेश की तथा कहा कि इन्हें यदि सरकार स्वीकार करती है तो आंदोलन नहीं छेड़ा जाएगा किंतु इरविन ने इन मांगों को अस्वीकार कर दिया।

Edit with WPS Office

आंदोलन का प्रारंभ

12 मार्च 1930 को प्रसिद्ध *दांडी यात्रा* द्वारा गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत की। अपने चुने हुए 78 अनुयायियों के साथ उन्होंने साबरमती से दांडी तक 200 मील की पैदल यात्रा की और 24 दिनों की लम्बी यात्रा के उपरांत **6 अप्रैल 1930** को समुद्र तट पर मुट्ठी भर नमक उठाकर कानून का उल्लंघन किया ।यह इस बात का प्रतीक था कि भारतीय अंग्रेजों द्वारा बनाए गए कानूनो के अधीन नहीं रहना चाहते थे ।

Edit with WPS Office

ऐतिहासिक दांडी यात्रा

Edit with WPS Office

नमक का मुद्दा ही क्यों?

- नमक को इस आंदोलन का प्रमुख मुद्दा बनाया गया क्योंकि सरकार ने इस अत्यावश्यक वस्तु की बिक्री को नियंत्रित कर रखा था और उस पर करारोपण किया था जिसका गरीबों पर अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा था।
- नमक ही एक ऐसा मुद्दा था जिस पर सभी भारतीय वर्ग आसानी से एकत्र हो जाते ।

Edit with WPS Office

- किसी भी अन्य मुद्दे पर राष्ट्रीय संघर्ष का संयुक्त मोर्चा टूट सकता था। नमक के मुद्दे पर ही गांधी ने शहरी बुद्धिजीवी और ग्रामीण निर्धनों के बीच की दूरी को पाटने की कोशिश की ।यह मुद्दा भावनात्मक रूप से सभी भारतीय वर्ग से जुड़ा था हालांकि शहरी बुद्धिजीवियों के लिए इसका आर्थिक महत्व कम था किंतु इसका मनोवैज्ञानिक महत्व अधिक था।

Edit with WPS Office

गांधी जी नमक बनाते हुए

Edit with WPS Office

सविनय अवज्ञा आंदोलन के कार्यक्रम

1. नमक कानून तथा अन्य कानूनों का उल्लंघन
2. भू राजस्व, लगान या अन्य करों का भुगतान ना करना
3. कानूनी अदालतों,विधानमंडलों ,चुनावों,सरकारी समारोहों ,सरकारी विद्यालयों और महाविद्यालयों का बहिष्कार
4. विदेशी वस्तुओं और कपड़ों का बहिष्कार तथा विदेशी कपड़ों का जलाना

Edit with WPS Office

सविनय अवज्ञा आंदोलन के कार्यक्रम

5. शराब तथा अन्य मादक पदार्थों को बेचने वाली दुकानों पर शांतिपूर्ण धरना देना

6. व्यापक हड़तालों और प्रदर्शनों का आयोजन करना

7. सरकारी नौकरियों से त्यागपत्र देना तथा नागरिक सैनिक तथा पुलिस सेवाओं में शामिल ना होना ।

Edit with WPS Office

आंदोलन का विस्तार

- ***सी. राजगोपालाचारी*** ने तमिलनाडु में त्रिचनापल्ली से वेदारण्यम की पैदल यात्रा कर नमक कानून भंग किया।
- मला बार में ***के. कल्लपन*** ने कालीकट से पायन्नूर तक की यात्रा कर नमक कानून तोड़ा।
- धरसना में **सरोजनी नायडू** के नेतृत्व में नमक आंदोलन किया गया ।अमेरिकी पत्रकार **वेब मिलर** ने इस यात्रा का वर्णन किया है

Edit with WPS Office

आंदोलन का विस्तार

- आंध्र प्रदेश में नमक सत्याग्रह हेतु ***शिविरम्***(सैनिक शिविर की तर्ज पर) बनाए गए।
- पेशावर में खुदाई खिदमतगारों के नेतृत्व में आंदोलन हुआ। यहां ***खान अब्दुल गफ्फार खान*** नेतृत्व कर रहे थे ।यहां हिंसक संघर्ष भी हुआ।

Edit with WPS Office

आंदोलन का विस्तार

- महाराष्ट्र के शोलापुर में मिल मजदूरों ने हिंसक प्रदर्शन किये।
- पूर्वी भारत (बंगाल बिहार)में **चौकीदारी कर रोको** आंदोलन चलाया गया जबकि गुजरात के खेड़ा जिले के बारदोली तहसील में भूमि कर न अदा करने का आंदोलन चलाया गया।

Edit with WPS Office

आंदोलन का विस्तार

- मध्य प्रांत, कर्नाटक और महाराष्ट्र में वन सत्याग्रह तेजी से सविनय अवज्ञा का सबसे विस्तृत एवं संघर्ष शील रूप बन गया था।नैनीताल में आंदोलन का नेतृत्व गोविंद बल्लभ पंत ने किया।
- असम में कनिंघम सर्कुलर के विरोध में छात्रों के नेतृत्व में एक शक्तिशाली आंदोलन चलाया गया। इस सर्कुलर के द्वारा छात्रों एवं उनके अभिभावकों को अच्छे व्यवहार का प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने को कहा गया।

क्रमशः जारी....

Edit with WPS Office